



“विचार ईश्वर आप नूं मान, अव विचार ईश्वर इक जान”
“शब्द है गुरु शरीर नहीं है”

सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ



सतयुग-सत्य का स्वर्ण युग तेजी से निकट आ रहा है

आओ सजन बनें, सतयुग की ओर बढ़ें।

समभाव समस्त प्राणियों के हृदय में प्रबल होगा

महामन्त्र - साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

यह लेख "The Speaking Tree" में पूर्वतः दिनांक 13 व 27 जून और 11 जुलाई 2010 को प्रकाशित संस्करणों के अनुक्रम में चौथा है। इसकी प्रतिलिपि हमारी वेबसाइट www.satyugdarshantrust.org पर भी उपलब्ध है।

इन लेखों का उद्देश्य मानवता में सर्वोच्च सत्ता के यथार्थ ज्ञान के प्रति जागृति लाने के साथ-साथ आने वाले सत्य के स्वर्ण-युग अर्थात् सतयुग के प्रति भी सचेत करना है ताकि सब समभाव-समदृष्टि के सुदृढ़ अनुशीलन द्वारा सतयुगी नैतिकता व आचार-संहिता को धारण कर यथार्थ में सतयुगी इंसान बन सकें।

महाबीर जी के मुख के शब्द

कलुकाल जब हटने लगा तो।
वह दिन आने वाला साजन जी, वह दिन आने वाला।
हो....हो....हो....
वह दिन आने वाला साजन जी, वह दिन आने वाला।
रोग सोग जगत तो हटनगे,
होसिया जगत सुखाला साजन जी, होसिया जगत सुखाला।
हो.... हो....हो....
होसिया जगत सुखाला साजन जी, होसिया जगत सुखाला।।
निन्द्या झूठ दे दो शब्द हटनगे।
होसिया जगत उजियाला साजन जी, होसिया जगत उजियाला।।
हो...हो...हो...
होसिया जगत उजियाला साजन जी, होसिया जगत उजियाला।
सच्चाई धर्म दे दो मन्त्र रटनगे।
फिरसिया इको माला साजन जी, फिरसिया इको माला।।
हो...हो...हो...
फिरसिया इको माला साजन जी फिरसिया इको माला।।

भिन्न भेद जगत तों हटनगे।
होसिया प्रेम निराला साजन जी, होसिया प्रेम निराला।।
हो....हो....हो....
होसिया प्रेम निराला साजन जी, होसिया प्रेम निराला।।
इको दी रटन सतवस्तु विच करनगे
श्री विष्णु भगवान हीरे नूं जीव होसिया पछाणन वाला साजन जी, होसिया पछाणन वाला।।
हो...हो...हो...
होसिया पछाणन वाला साजन जी, होसिया पछाणन वाला।।

ध्वनि:-

मैं तूं दे विच फरक मत जानो।
अपने हृदय विच राम नाम ही मानो।।
आओ मेरा प्यारा श्री भगवान नाम तुम्हारा।
आपे खेल खिलारिया आपे दिता समेट।
जीव नूं पता किस तरह लगे एक हो के अनेक।।

यह तो सर्वविदित ही है कि कुदरत ने समयकाल को चार युगों में बाँट रखा है, ये हैं सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग और कलियुग। अब जो समयकाल चल रहा है वह है कलियुग। कुदरत के नियमानुसार इस युग के बाद 'सतयुग'-स्वर्णयुग का आना सुनिश्चित है इसलिए इस सत्य के प्रति जागरूक हो हम सबका आने वाले स्वर्णयुग की योग्यता को धारण करना अनिवार्य है ताकि हम स्वयं को तदनुरूप ढालने में समर्थ हो सकें।

आज मनुष्य का मन-मस्तिष्क अपने अस्तित्व और क्षमता की पूर्ण जागृति खो चुका है और गहराई से काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार जैसे घातक विकारों में धँस चुका है। समाज की वर्तमान दुःखद स्थिति इस बात का साक्षात् प्रमाण है कि कलियुग अपनी चरम सीमा पर है और शीघ्र ही हटने वाला है।

इसलिए आज यह समय की सर्वप्रथम माँग है कि मानवता की निरंतर तबाही और मानवीय चारित्रिक हनन का अंत करने हेतु सद्भावना पूर्ण सामूहिक प्रयत्न किए जाएँ। आओ "सतयुग"-आने वाले युग के स्वागत हेतु स्वयं को सतयुगी नैतिकता और आचार संहिता के अनुरूप ढालने का प्रयत्न करें। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु एक ऐसे अभियान को प्रारंभ करने की आवश्यकता है जिसके द्वारा प्रत्येक व्यक्ति को सम, संतोष, धैर्य, सच्चाई, धर्म जैसे सद्गुणों के यथार्थ मूल्यों से परिचित कराया जा सके और वे तदनुरूप अपने चरित्र का निर्माण करने में सक्षम बन सकें। इस लक्ष्य की पूर्ति हेतु उद्देश्यपूर्ण उत्कंठा की आवश्यकता है। तभी हम इन सद्गुणों का पूर्ण गहनता और समझदारी से ज्ञान प्राप्त कर इनका पूर्ण लाभ उठा पाएँगे और ऐसे सजन पुरुष बन सकेंगे जो आचार, विचार और व्यवहार में नम्र व परिष्कृत होने के साथ-साथ सद्भावना युक्त, शिष्ट, उदार व नेक सम्माननीय व्यक्ति भी होता है। जान लो कि यह एक भले आदमी की कुछ चारित्रिक विशेषताएँ हैं। आओ दूसरों के

लिए अनुकरणीय आदर्श बनने हेतु एवं वर्तमान व भावी पीढ़ी में इन्हें स्थानांतरित करने हेतु इन सद्गुणों को आजीवन सुदृढ़ता से धारे रखने का संकल्प लें।

इसलिए प्रत्येक के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि वह सम, संतोष, धैर्य, सच्चाई व धर्म की जीवन में महत्ता की जानकारी प्राप्त कर पूर्णतः आत्मसात् करे तथा तदुपरांत विचारों में उन्हें सुदृढ़ता से धार कर उनसे प्राप्त लाभों का अपने मन, वचन व कर्म द्वारा प्रदर्शन करे।

इस हेतु हमें द्विभाव और उन समस्त मानव निर्मित सीमाओं विशेषतः धार्मिक बन्धनों को तोड़ना होगा जिन्होंने इंसान के मन-मस्तिष्क में अथाह संघर्ष उत्पन्न कर अनेकानेक पंथों के माध्यम से विघटन की स्थिति उत्पन्न कर दी है। आत्मविश्वास के लोप से आज इंसान के लिए शांतिपूर्ण ढंग से रहना, स्वतंत्रता पूर्वक कार्य करना, एवं जीवन के प्रधान उद्देश्य को सही तरीके से प्राप्त करने का यत्न करना असंभव हो गया है। इस विस्मयकारी व आश्चर्यजनक स्थिति में आज प्रत्येक व्यक्ति का मन-मस्तिष्क इस सत्य से पूर्णतः विमुख हो गया है कि शाश्वत सत्ता में हर स्थान पर हर व्यक्ति में व्याप्त होने का गुण विद्यमान है और इस प्रकार यह सिद्ध होता है कि एक जैसे होने के नाते हम सब एक हैं और उस सर्वव्यापक, सर्वज्ञ तथा सर्वशक्तिमान ईश्वर की संतान हैं। ध्यान दो कि एक मात्र इस सत्य से विमुख हो जाने के परिणामस्वरूप ही आज प्रत्येक मानव का मन-मस्तिष्क मानव निर्मित मूल्यों व धार्मिक बंधनों में ग्रस्त होकर परस्पर प्रतिस्पर्धा व विरोधाभास के कारण मानसिक एवं भावात्मक रूप से अन्तहीन संघर्ष में रत है।

इसलिए इस दुःखद अवस्था से उबरने हेतु ही सतयुगी नैतिकता व आचरण-संहिता को अपनाने की आवश्यकता उत्पन्न हुई है। इस प्रकार मन-वचन-कर्म

से सजन-भाव के अनुशीलन द्वारा समभाव-समदृष्टि के मूल्यों को सुदृढ़ता से आत्मसात् करने के अतिरिक्त आज मनुष्य के पास कोई अन्य विकल्प नहीं है। यह भावनाओं व वृत्तियों को सकारात्मक दिशा में प्रवृत्त करके मस्तिष्क को सुदृढ़ आधार प्रदान करने के लिए भी अति आवश्यक है। तात्पर्य यह है कि सजन भाव को विचारों के अनिवार्य सिद्धान्त के रूप में स्वीकार कर ऐसा मार्ग दर्शक, स्वतंत्र व ओजस्वी व्यक्ति बना जा सकता है जो सहजता से आध्यात्मिकता को जीवन में उतार ले।

आओ अपने अंतर्निहित छिपे सदगुणों की उपयोगिता का औचित्यपूर्ण यथातथ्य विस्तृत ज्ञान प्राप्त कर सजन पुरुष यानि नेक व्यक्ति बनने का संकल्प लें। इस हेतु हमें समभाव एवं समदृष्टि में पूर्ण प्रज्ञा बनने के साथ-साथ उसे अपनी दिनचर्या में लागू करने का विवेक और कौशल भी प्राप्त करना होगा।

प्राकृतिक बुद्धिमत्ता हेतु समभाव एवं समदृष्टि

सतयुगी नैतिकता और आचार संहिता का सतर्कतापूर्ण मनन करने योग्य बनने के लिए आओ हम सब अभी से अपने मन-मस्तिष्क में समभाव-समदृष्टि की अवधारणा को समझना प्रारंभ करें और सम्पूर्ण गंभीरता व सतर्कता से किए गए विचार-विमर्श द्वारा अपनी चेतना में सजन भाव के अनुभव को विकसित करने का यत्न करें। यहाँ यह जान लो कि जहाँ सचेतनता मस्तिष्क की पूर्ण जागृति का सूचक होती है और सज्ञान व सदगुणों का रास्ता दर्शाती है वहीं अचेतनता मानस की वह अगम्य, गहनतम यानि अंधकारमय स्थिति है जहाँ सूक्ष्म शरीर में दबे हुए मनोवेग सदैव क्रियाशील अवस्था में विद्यमान रहते हैं। जान लो कि मस्तिष्क की यह अचेतनता ही अपने आप में वह विकार युक्त अवस्था है जो समस्त व्याधियों व पीड़ा की जड़ है तथा जिसके द्वारा एक व्यक्ति के सम्पूर्ण सुख, आनंद व खुशी का विनाश हो जाता है। इसलिए एक व्यक्ति को सच्चाई और धर्म के मार्ग पर धैर्यपूर्वक अग्रसर होने के लिए निरन्तर जागरूक और सतर्क बने रहना चाहिए। यहाँ यह जानना आवश्यक है कि धैर्य कठिन परिश्रम की घड़ियों में भी प्रत्येक पीड़ा, विलम्ब, उत्पीड़न व संताप इत्यादि जैसी सामयिक परिस्थितियों को शांतिपूर्वक सहन करने की विशेषता है।

यहाँ यह जान लो कि समभाव एवं समदृष्टि के अनुशीलन में सुदृढ़ता से ही मनुष्य का मन-मस्तिष्क बुद्धिमत्ता से शांतिपूर्वक कार्य कर पाता है और व्यक्ति विशेष की मनोदशा उपशम होकर आत्मनियंत्रित बनी रहती है। इस प्रकार मानसिक स्थायित्व एवं संतुलन को बनाए रखने में निपुण व्यक्ति अपनी ज्ञानेन्द्रियों, बौद्धिक क्षमताओं व क्रियाकलापों द्वारा नेक व भलाई के कार्य करने योग्य बन जाता है। तदुपरांत उसके लिए समभाव एवं समदृष्टि की अवधारणा को समझकर अपने वास्तविक जीवन में उतारना कोई कठिन काम नहीं रह जाता है। याद रखो ऐसा व्यक्ति समभाव एवं समदृष्टि का गहनता से ज्ञान प्राप्त कर न केवल स्वयमेव अपने मिजाज को शांतमय एवं संगठित अवस्था में रख सुखद जीवन जीने के योग्य बन जाता है अपितु दूसरों के लिए एक अनुकरणीय आदर्श रखने में भी कामयाब हो जाता है।

इसी तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए मस्तिष्क की क्रिया विधि के साथ-साथ उसकी पवित्रता को बनाए रखने की सुनिश्चितता के विषय में जानना भी अति आवश्यक है। आओ जानें कि मस्तिष्क किसी भी व्यक्ति के विचारों और भावनाओं की अवस्था है। इसमें विचारने, जानने, अनुभव करने और इच्छा करने की क्षमता होती है इसलिए इसे हर प्रकार के गुनाह और पाप से विमुक्त रखना अनिवार्य है। इसका अर्थ है कि सत्य दिव्य ज्ञान प्राप्ति के साथ-साथ संसारी ज्ञान प्राप्त करने के लिए मन-मस्तिष्क और हृदय की विशुद्धता बनाए रखना अति आवश्यक है ताकि मानवीय सदगुणों को सुदृढ़ता पूर्वक धारण कर मनुष्य के व्यक्तित्व का सम्पूर्ण विकास हो सके। जान लो कि तभी हम अपने विचारों व भावनाओं को पारदर्शी यानि सुस्पष्ट बनाए रख सकेंगे। यही नहीं यह सकारात्मक विशेषता सदगुणों को आत्मसात् कर स्वाभाविक रूप से अपने असलियत स्वरूप को जानने में भी सहायक सिद्ध होगी। इस प्रकार हम आत्मविश्वासी व आत्मनिर्भर बन न केवल अपने जीवन के सर्वोत्कृष्ट लक्ष्य को हासिल कर सकेंगे अपितु एक प्रकाशित व्यक्ति की भाँति अपने समस्त कर्तव्यों को भी पूर्ण सत्यता, ईमानदारी व वफ़ादारी से निष्पादित कर सकेंगे। याद रखो ज्ञानोदय की इस स्थिति के पश्चात् एक व्यक्ति के रोने और झुखने की नकारात्मक अभिवृत्ति स्वयमेव समाप्त हो जाती है और मनुष्य जीव, जगत और ब्रह्म की सूक्ष्म जानकारी प्राप्त कर उदारमनस्क हो जाता है।

इस संदर्भ में ऊपर वर्णित सच्चाई और धर्म की राह पर अटलता से चलते हुए अपना स्वाभाविक रूपांतरण सुनिश्चित करने के लिए एक व्यक्ति को काम, क्रोध, लोभ, मोह अहंकार रूपी पाँच दुश्मनों के प्रति सावधान रहना होगा ताकि भूल से भी वह धर्मभ्रष्ट हो भटक न जाए।

इसलिए सभी पापों के बीज अर्थात् पाँच दुश्मनों से सावधान रहो

जान लो कि सभी स्वार्थपूर्ण इच्छाओं का अंकुरण काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार रूपी बीजों से ही होता है। ये बीज अधिकतर इंद्रियों, मन-मस्तिष्क और बुद्धि में पाए जाते हैं जो उन्हें पथभ्रष्ट कर देते हैं। ध्यान दो इसी दुविधाग्रस्त स्थिति में विवेक लुप्त हो जाता है। अन्य शब्दों में इन पाँच चोरों की फ़ौज में किसी भी व्यक्ति के ज्ञान, बोध, प्रयोगात्मक कौशल व अनुभवों को नष्ट करने की क्षमता होती है।

आओ नैतिक पतन के इन घातक कारणों को संक्षेप में जानें:-

काम मनुष्य के लिए सर्वाधिक साधारण व सबसे कठिन प्रलोभन है। यह मनुष्य को दुर्व्यसनी बनाता है इसीलिए विनाशकारी है। यह आत्मनियंत्रण जैसे ईश्वरीय सदगुण का विरोधी है इसलिए काम को मनुष्य के मन-मस्तिष्क की अतृप्त क्षुधा माना जाता है।

जानो कि **क्रोध** वह ऊष्ण व अप्रिय स्थिति है जो विपरीत क्रिया, घटना व परिस्थिति द्वारा भड़काकर उत्पन्न की जाती है इसके अन्तर्गत अधिकतर प्रतिशोध की इच्छा व शत्रुता का भाव सम्मिलित होता है। क्रोधावेश से ग्रस्त होने पर नफ़रत की भावना उत्पन्न हो जाती है और व्यक्ति विशेष दूसरों को अपना शत्रु या दुश्मन जानकर उनपर अपना गुस्सा उतारता है। परिणामस्वरूप ऐसे व्यक्ति के क्रियाकलाप उसके मन-मस्तिष्क की शांति व प्रसन्नता भंग कर दूसरों के लिए पीड़ा उत्पन्न करते हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि क्रोधावेश में कहे हुए शब्द व किए हुए कार्य सर्वप्रथम स्वयं को ही आहत करते हैं। मस्तिष्क की वास्तविक शांति का आनन्द मानने हेतु आओ इस पापयुक्त विकार को जड़ से उखाड़ उस पर विजय पाने का संकल्प लें।

मोह धोखा है अर्थात् असत्य को ही सत्य समझकर स्वीकारना है। यह भ्रम भी है अर्थात् किसी पदार्थ की उत्तेजना की दुर्व्याख्या के कारण उत्पन्न हुआ मिथ्या बोध है। यह सत्य का भ्रम उत्पन्न करता है जिससे बाह्य जगत यानि सांसारिक मोह और आसक्ति के भ्रमात्मक होने का सिद्धान्त सुनिश्चित हो जाता है। यहाँ जान लो कि जहाँ मोह दूसरों को प्रभावित करने की क्रिया है वहीं आसक्ति जकड़ने की क्रिया है। इस प्रकार यह मन-मस्तिष्क को प्रभावित कर पदार्थों से जोड़ने की ऐसी क्रिया है जिसके कारण दृष्टि एवं मतिभ्रम उत्पन्न होता है।

यहाँ स्पष्ट कर दें कि दृष्टि एवं मतिभ्रम मन-मस्तिष्क की ऐसी मादक अवस्था है जिसके कारण व्यक्ति अभीप्सित वस्तु के अतिरिक्त और किसी भी विषय में विचार करने में असमर्थ हो जाता है। इसीलिए हमें हमेशा याद रखना चाहिए कि मोह एक ऐसा विकार या बीमारी है जो अंततः मानसिक अव्यवस्था की स्थिति उत्पन्न करता है। ऐसा व्यक्ति सदैव नाकामयाबी को प्राप्त कर पराजित हो जाता है। आओ विजय प्राप्त करने के लिए स्वयं को इस विकार से बचाने का संकल्प लें।

अपनी प्रारब्ध से अधिक प्राप्त करने की उत्कट अभिलाषा यानि तृष्णा ही **लोभ** है जो कि निरन्तर बढ़ती रहती है।

अभिमान घमंडी होने का भाव या दशा है। हम कह सकते हैं कि यह वह आनंदप्रदायक व संतोषप्रद भाव है जो स्वयं द्वारा अथवा अपने से जुड़े किसी व्यक्ति या पारिवारिक समर्थन में किए किसी प्रशंसनीय कार्य को करने के उपरांत प्राप्त होता है। इसके अंतर्गत धन संपत्ति के संग्रह का मिथ्या अभिमान भी सम्मिलित है। इस प्रकार यह व्यक्ति को अहंकारी बनाता है।

अपनी मानसिक स्वस्थता पर इन पाँच दुश्मनों की फ़ौज द्वारा छोड़े गए विघटनकारी दुष्प्रभावों को जानने के पश्चात् आओ अपनी सम्पूर्ण शक्ति द्वारा स्वार्थयुक्त इच्छाओं को उत्पन्न करने वाले पाँच शत्रुओं व उनकी फ़ौज पर विजय पाने का दृढ़ संकल्प लें। यह अपनी इन्द्रियों को संयमित रख, अपने मन-मस्तिष्क की शुद्धता द्वारा ज्ञानवान बनने के लिए अति आवश्यक है। तभी हम स्वयं को स्वाभाविक रूप से परिवर्तित कर भौतिक ज्ञान के विपरीत सत्य आध्यात्मिक ज्ञान का अपने मन-मस्तिष्क में विकास कर पाएंगे। इस हेतु सजन भाव की अवधारणा को गहनता व समझदारी से स्वीकार करने की आवश्यकता होगी क्यों कि यह भाव ही सभी प्रकार की बुराइयों व पापयुक्त आचरण से हमारी रक्षा करने वाला है।

आओ, समभाव-समदृष्टि के अनुशासित अनुशीलन द्वारा सजन भाव को किस प्रकार अपनाया संभव है यह जानें।

सजन-भाव

समभाव एवं समदृष्टि की युक्ति हम सभी को यह संदेश देती है कि हम वास्तविक अर्थों में 'सजन' बनें अर्थात् ऐसे श्रेष्ठ आदर्श पुरुष बनें जो सजनता से ओत-प्रोत हों। यह दिव्यता से जीवन जीने के लिए अति आवश्यक है।

'सजन' अर्थात् एक माननीय व्यक्ति या भला व्यक्ति जो प्रत्यक्षता व व्यवहार में सौम्य व सुशील हो और सदैव दूसरों का आदर करते हुए उनके साथ उचित, सौम्य और नेक व्यवहार करता हो। ऐसा व्यक्ति सभी परिस्थितियों में विनम्र,

मृदु एवं सचेत बना रहता है और दूसरों के साथ व्यवहार करते समय अशिष्ट, उग्र व निष्ठुर/कर्कश नहीं होता। इस प्रकार वह कभी असत्य, कटु, अप्रिय, अनर्थक वचन नहीं बोलता और न ही किसी की निंदा-चुगली करता है क्योंकि वह जानता है कि ये सब अवगुण उसके विचारों व वाणी को विकृत कर उसकी मानसिक शांति के साथ-साथ वातावरण की शांति को भी भंग कर देते हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि जो व्यक्ति इस तथ्य के प्रति सचेत होता है कि बिना सोचे, समझे व विचारे बोले हुए शब्द दूसरों के लिए विषाक्त सिद्ध होते हैं, वह मानवीय उत्कृष्टता का प्रतीक होता है और सभी उसका आदर-सम्मान करते हुए उसे सहज ही स्वीकार लेते हैं।

अतः हम कह सकते हैं कि 'सजनता' सभी प्रकार के गुणों जैसे सद्चरित्र, सद्व्यवहार, विशुद्धता, शौर्यता, बहादुरी, योग्यता, सामर्थ्यता का बीज-स्रोत है और यह किसी व्यक्ति के सजन पुरुष यानि भला आदमी बनने के लिए आवश्यक है।

'भाव' शब्द किसी अवस्था या स्थिति को जताता है। किसी व्यक्ति की विवेकशीलता उसके मन-मस्तिष्क के भाव के स्तर को जन्म देती है जो कि अन्ततः उसकी प्रकृति, सिद्धान्त, प्रवृत्ति, आदत, स्वभाव, गुण या चरित्र बन जाता है।

अतः हमें यह हमेशा याद रखना चाहिए कि 'सजनता पर आधारित' भाव सदैव न केवल हमारे अस्तित्व पर सकारात्मक प्रभाव डालते हैं बल्कि जीवात्मा, मन-मस्तिष्क और शरीर के अतिरिक्त हमारे गुण, चरित्र व जीवन का सिद्धान्त बनाने वाले भावावेग, भावना, अनुराग, मनोवृत्ति, चित्त-वृत्ति, अनुभूति, कल्पना, आत्मविश्वास व आस्था आदि को भी स्वरूप प्रदान करते हैं। इसके विपरीत द्वैत भाव और अन्य सभी प्रकार के भाव हमें एक निकृष्ट, दुराचारी, धोखेबाज, चतुर-चालाक (जो कि एक अधमी या हम कह सकते हैं कि एक राक्षस या असुर के प्रतीक हैं) बनाते हैं और इस प्रकार का व्यक्ति "मारो-तोड़ो, खाओ-पिओ," आदि के नियमों का व्यवहार करता है और दूसरों की वस्तुएँ चुराने के सिद्धान्त की पालना करता है। इस प्रकार के आचरण के अन्तर्गत दुर्भावना, कसमें खाना, झूठ बोलना, जुआ खेलना, कर्जा लेना, अहंकार प्रदर्शन में आनंद मनाना, निर्दयता दिखाना, व्यभिचार, चोरी-चकारी करना और दूसरों को दुःख पहुँचाना दिन-प्रतिदिन का व्यवहार बन जाता है।

हम यह कह सकते हैं कि 'सजन भाव' के मूलाधार पर आश्रित यानि पले-बढ़े व्यक्ति का चरित्र पूर्णतया सकारात्मक गुणों व श्रेष्ठताओं से परिपूर्ण हो जाता है।

इसलिए हम सभी को यह स्वीकार करना चाहिए कि 'सजन भाव' हमें मानवता पढ़ाता है और नकारात्मकता यानि मन-मस्तिष्क के भीतर गहराई तक बैठे नकारात्मक विचारों से दूर रखता है। याद रखो इस संदर्भ में मनन व विचार करना इसलिए भी आवश्यक है ताकि हम पशुओं एवं अल्पबुद्धि जीवों से विभेदित हो इस विश्व को एक सामंजस्य एवं सौहार्द्र पूर्ण ग्रह बना सकें। यही नहीं सजन-भाव मन-मस्तिष्क की उग्र अवस्था के उन्मूलन हेतु हमें अहंकार व स्वार्थ युक्त कलियुगी चंचल स्वभावों से परे सतयुग के शान्त एवं स्थिर स्वभावों में ढलने के लिए भी प्रेरित करता है। इस संदर्भ में याद रखो कि सतयुग में द्वैत-भाव का कोई भी स्थान या अस्तित्व नहीं होता। इस प्रकार यह भाव जीवन की किसी भी विपरीत परिस्थिति में हमें विषाद, रोने-झुखने व नकारात्मक सोच आदि में जाने से रोकता है।

ध्यान दो सही मायने में एक सज्जन व्यक्ति आपसी बातचीत के दौरान आदर-सम्मान व प्रेम सूचक 'जी' शब्द का प्रयोग करता है। तात्पर्य यह है कि ऐसा व्यक्ति जानता है कि इस आदर और सम्मान सूचक 'जी' शब्द का प्रयोग करने से परस्पर आदर भाव मज़बूत होता है इसीलिए वह दूसरों को सम्मानित करने हेतु 'तू' और 'तुम' के स्थान पर 'आप' शब्द का प्रयोग भी करता है। हम कह सकते हैं कि 'जी' और 'आप' दोनों ही शब्द सजन भाव के प्रतीक हैं। मन-वचन-कर्म द्वारा इनके संयुक्त प्रयोग से मनुष्य के मन मस्तिष्क में स्वयमेव आवश्यक मानवीय सद्गुणों का सर्वांगीण विकास हो जाता है। इसके अतिरिक्त ये शब्द हमारी जीवात्मा, मन-मस्तिष्क और जीवन को सकारात्मक ऊर्जा व उत्साह से भरपूर करने के साथ-साथ आपसी संबंधों को प्रेम-प्रीति और धैर्य से निष्पादित करने का साहस और दृढ़ निश्चय भी प्रदान करते हैं। यही नहीं इन शब्दों से युक्त विशुद्ध, हितकर, सजनतायुक्त, विनम्र व कर्णप्रिय वाणी जहाँ वातावरण को शांतमय बनाए रखती है वहीं इसके प्रयोग से व्यक्ति दयालु, स्नेही, शिष्टाचारी, सर्वसम्मत व आनंदमय बना रहता है।

इसी संदर्भ में जब दो व्यक्ति मिलते हैं तो वे सदैव एक दूसरे का आदरपूर्वक अभिवादन करते समय नमस्कार, नमस्ते, शुभप्रभात, जय सीता राम जी, सतश्रीअकाल इत्यादि कहकर सम्बोधित करते हैं। यह एक दूसरे को सहृदयता से सम्मान देने के साथ-साथ हर प्रकार के पूर्वाग्रह को त्यागने के

लिए अति आवश्यक है। यही नहीं यह मनुष्य के सद्गुण युक्त होने का सूचक भी है क्योंकि यह स्मरण कराता है कि ईश्वर सर्वव्यापक है। इस आंतरिक वृत्ति की सार्थकता अभिवादन के शब्दों जैसे नमस्ते इत्यादि में निहित होती है जिसका अर्थ है "मैं अपने समस्त बुद्धि-बल, बाहुबल, आत्मिक बल एवं प्रेम से आपकी अन्तरात्मा का हार्दिक अभिनंदन करता हूँ"। इस प्रकार इस प्रक्रिया द्वारा वस्तुतः एक व्यक्ति दूसरे के हृदय में अपने ही असलियत स्वरूप का दर्शन करता है।

यहाँ यह जानना अनिवार्य है कि मन-मस्तिष्क की क्षमता और योग्यता का सम्पूर्णतः विकास करने के लिए सजन भाव का युक्तिसंगत अनुशीलन अति आवश्यक है। यह भाव प्रभावोत्पादकता और आध्यात्मिक दृष्टिकोण प्रदान करता है ताकि जीव न केवल सर्वशक्तिमान व सर्वज्ञ भगवान यानि ब्रह्म के सद्गुणों को सक्षमता से समझने के योग्य बन सके अपितु स्वयं उसी स्तर की बुद्धिमत्ता व असीमित शक्ति और ज्ञान सरलता से विकसित करने की क्षमता भी धार सके।

ऐसा व्यक्ति पूर्णरूपेण विवेकशील, समझदार, श्रेष्ठ, कुशाग्रबुद्धि, आत्मविश्वासी, चतुर, ज्ञानवान, कुशल और दक्ष होता है। इसी कारण वह अपने ज्ञान के सही प्रयोग द्वारा तथ्यों की यथार्थपूर्ण विवेचना कर पाता है और ईश्वरीय गुणों व हुक्म का स्वयं सफलतापूर्वक प्रदर्शन करते हुए सरलता से उन्हीं गुणों का प्रसार करने में समर्थ हो पाता है।

इस प्रकार सजन भाव मनुष्य को ईश्वर की तरह शुद्ध और पवित्र बनाए रखने के लिए विवेकशीलता प्रदान करने के साथ-साथ स्वाभाविक मानसिक स्थिरता भी प्रदान करता है। फलस्वरूप मनुष्य सदैव सत्यनिष्ठ और धर्मपरायण बने रहकर अनुकूल आचरण को ही प्रवान करता है और अपने जीवन में अपनी भूमिका का भली-भाँति निर्वाह कर पाता है।

वास्तविक रूप से सजन बनने के लिए आओ इन सद्गुणों को धारण करें

- ✦ विपरीत परिस्थितियों में भी अपने मन-वचन-कर्म में सच्चाई को धारण किए रहें।
- ✦ समभाव समदृष्टि के अनुशीलन में दक्ष व निपुण बनें।
- ✦ अपने आप को पवित्र, प्रसन्न व प्रगतिशील बनाए रखने के लिए अपनी वाणी को संयमित रखने का अभ्यास करें।
- ✦ पूर्ण रूप से विवेकशील बनने के लिए ज्ञान का कुशलतापूर्वक न्यायसंगत प्रयोग करें और सबके साथ समतापूर्ण निष्कपट व्यवहार करें।
- ✦ धैर्य का अभ्यास करें और प्रत्येक परिस्थिति में संतुष्ट बने रहें।
- ✦ सर्वोत्तम रूप से उद्यमी बनने के लिए निरन्तर प्रयत्नशील बने रहें और प्राप्त परिणामों के प्रति हर हालत में संतुष्ट बने रहें।
- ✦ तनावपूर्ण अवस्था में भी आनन्दित बने रहें अर्थात् संकटकाल, अधिकतम दबाव व परेशानियों का सामना करते समय भी परिपक्वता से सहनशील बने रहें।
- ✦ परस्पर व्यवहार के समय अप्रियता, दुर्व्यवहार व तिरस्कार से विमुक्त रहने की सक्षमता धारें।
- ✦ चारित्रिक उत्थान के लिए, नैतिक सिद्धान्तों की सुदृढ़ता के लिए व ईमानदारी से पूर्ण सच्चाई को धारण करने के लिए क्रिया को परिणाम में परिणित करने की योग्यता धारें।
- ✦ धर्मनिष्ठ और परोपकारी बनने के लिए दूसरों की निष्काम सेवा करें। अपने अच्छे व्यक्तित्व के आधार पर नेतृत्व की क्षमता धारें व सद्गुणों पर आधारित जीवन जीने के लिए आजीवन वचनबद्ध होकर निरन्तर उत्सुक व इच्छुक बने रहें।
- ✦ मुश्किल के समय मानसिक स्थायित्व के लिए अपनी भावनाओं को नियन्त्रित करने की योग्यता धारें।
- ✦ कर्तव्यों को पूर्ण रुचि, गंभीरता, प्रसन्नता व आशावादी दृष्टिकोण से निष्पादित करने की कला सीखें और सदैव सुकर्म करने का निश्चय लें।
- ✦ समयानुसार स्वीकृत समय पर प्रत्येक कार्य करने की क्षमता धारें।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि सजन भाव एक ऐसे सर्वगुण सम्पन्न व्यक्ति का सूचक है जिसका मानसिक संतुलन हर परिस्थिति में यानि सुख-दुःख, अमीरी-गरीबी व मान-अपमान में सदैव सामंजस्यपूर्ण, स्थिर व संतुष्ट बना रहता है। याद रखो जिस व्यक्ति की प्रकृति सजन भाव रूपी बीज से प्रस्फुटित होती है वह व्यक्ति सदैव सकारात्मक व सर्वगुण सम्पन्न होने के साथ-साथ श्रेष्ठता व उत्कृष्टता का प्रतीक होता है।

इसलिए आओ सजन बनने के लिए संकल्प लें:-

1. स्वयं भी धार्मिक जीवन जिएं व ईश्वर की प्रत्येक कृति को भी शांतिमय जीवन जीने दें।
2. सतयुगी नैतिकता के आधार पर एक ही ईश्वर के प्रति स्वेच्छा से

आध्यात्मिक निष्ठा रखें। धर्म-जाति-पन्थ-रंग-लिंग इत्यादि सब मतभेदों एवं मानव निर्मित भक्ति के विभिन्न स्वरूपों से उबरने के लिए यह परम आवश्यक है।

3. इस सत्य को जान लो कि असीम (ईश्वर) को किसी भी मानव निर्मित सीमा में नहीं बाँधा जा सकता। याद रखो ज्ञान व समय में भी ऐसा करने की क्षमता व शक्ति नहीं है।
4. ईश्वर के कर्तव्यपरायण सुपुत्र बनने के लिए ईश्वर के हुक्म का बहादुरी व साहस से पालन करें।
5. अपने मन-मस्तिष्क को काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार जैसे विषय विकारों से विमुक्त रखें क्योंकि ये विकार ही पापयुक्त अमानवीय कृत्यों की जड़ हैं।
6. यह जानें कि नकारात्मक शक्तियाँ मन-मस्तिष्क को ईश्वर से दूर यानि विपरीत दिशा में खींचती हैं और उसके हुक्म के विरुद्ध चलने के लिए उकसाती हैं जिसका मानव के जीवन पर अतिशय विनाशकारी प्रभाव पड़ता है।
7. शब्द गुरु में आस्था रखें शरीर में नहीं।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है।

मूल मंत्र है शब्द गुरु, मूल मंत्र है शब्द गुरु! सजन श्री शनहनशाह हनुमान जी ने बताया है और कहा है कि हे इन्सान यह तेरी ही ब्रह्म सता है। अगर तू इस महान सता को ग्रहण कर ले तो तू खुद ही भगवान है और साथ यह वर्ताव बताया कि शब्द में जुड़ कर सजन भाव और गृहस्थ धर्म के वचनों पर परिपक्व हो फिर जो प्रकाश तुम ने मन-मन्दिर में देखा है वही प्रकाश सारे जग में दिखाई देगा। उस प्रकाश में अटल होकर हर हालत में एक रस रहो क्योंकि तू अजन्मा है तेरी आत्मा अमर है। एक आत्मा होकर तू देखेगा कि सर्व सर्व वही ब्रह्म ही ब्रह्म है फिर ब्रह्म विशेष भी है निर्लेप भी है और रूप रंग से बाहर है।

तात्पर्य यह है कि इस ब्रह्माण्ड के प्रत्येक चराचर प्राणी में भावात्मक यानि नैतिक स्तर पर परस्पर समन्वय व सामंजस्य स्थापित करने के लिए सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान भगवान ने शब्द गुरु की मूल सिद्धान्त के रूप में व्याख्या की। जान लो कि यह मूल मन्त्र यानि शब्द गुरु ही हमारा आध्यात्मिक पथप्रदर्शक है और यही शब्द गुरु ही परमानन्द की प्राप्ति हेतु दिव्यता की खिड़की खोलने की कुंजी है। इस प्रकार आप सभी इस प्राकृतिक सत्य को स्वीकारेंगे कि शब्द ही वह केन्द्र बिन्दु है जहाँ से हर पदार्थ के अन्दरूनी (आध्यात्मिक) व बहरूनी (भौतिक) ज्ञान का प्रकटन हो रहा है। यही सुरत व शब्द के मिलन का व विलीन होने का केन्द्र बिन्दु है।

ऊपर वर्णित तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए समस्त मनुष्यों के लिए यह अनिवार्य हो जाता है कि वे ईश्वर के इस मूल सिद्धान्त को अपने जीवन के मार्गदर्शक सिद्धान्त के रूप में स्वीकारें। तात्पर्य यह है कि आपका उद्देश्य, ख्याल, नीयत, विचार-प्रक्रिया, तर्कशक्ति, गंभीरता व सावधानी पूर्वक किया चिंतन, विचार-विमर्श, दृढ़ निश्चय, ध्यान इत्यादि सब इसी पर आधारित हो। हम कह सकते हैं कि यह मानवीय सद्गुणों जैसे संतोष और धैर्य पर आधारित सच्चाई-धर्म जैसे महान मानवीय गुणों को प्राकृतिक रूप से धारण करने के लिए और वस्तुतः हम क्या हस्ती हैं, उस असलियत को जान कर तदनुरूप बनने के लिए अति आवश्यक है। परिणामस्वरूप आप अपनी अन्दरूनी विशिष्ट प्रकृति को मन, वचन, कर्म के रूप में धरातल पर लाने में यानि प्रकट करने में सक्षम हो जाएंगे और सशक्त चरित्र व अच्छी किस्मत वाले इंसान के रूप में विकसित होंगे। तत्पश्चात् आप सबके लिए इसी जीवन काल में अपने जीवन के सर्वाधिक महत्वपूर्ण मुख्य लक्ष्य यानि मोक्ष को पाना सहज हो जाएगा।

जान लो कि इस सिद्धान्त के विपरीत किसी शरीरधारी को गुरु मानने का अर्थ है आध्यात्मिकता के मार्ग से भटक जाना परिणामस्वरूप सांसारिक स्वार्थपूर्ण अन्तहीन इच्छाओं की ओर आकर्षित हो मृतलोक में आवागमन के दुष्क्रम में तब तक फँसे रहना जब तक कि अंतिम इच्छा पूर्ण न हो जाए। यह जान लो कि मनुष्य द्वारा बनाए सिद्धान्तों व आस्था के आधार पर जीवन व्यतीत करने से मन-मस्तिष्क सांसारिक ज्ञान व वस्तुओं में इस हद तक लीन हो जाता है कि बुरी नीयत से युक्त नकारात्मक भाव-भावनाएँ उपजनी शुरू हो जाती हैं। फलतः इन स्वार्थपूर्ण इच्छाओं की पूर्ति हेतु मनुष्य हर जायज़ व नजायज़ तरीका अपनाकर पापमय आचरण करने लगता है। इस प्रकार उसके मन-मस्तिष्क में काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार जैसे विकारों का अंकुरण आरम्भ हो जाता है और नकारात्मकता की प्रधानता से उसका शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य बुरी तरह से प्रभावित होता है।

यही नहीं नश्वर गुरु से जुड़ने के कारण स्वभावतः उसका रुझान भौतिक

पदार्थों की ओर हो जाता है। याद रखो यही कमजोरी किसी के भी अमानवीय कृत्यों की ओर प्रवृत्त होने का मुख्य कारण होती है जिसके फलस्वरूप व्यक्ति विशेष के मन-मस्तिष्क की अवस्था सदैव विक्षुब्ध व अशान्त बनी रहती है। ध्यान दो ऐसा ही व्यक्ति मिथ्या सांसारिक ज्ञान प्राप्ति से सदैव संतुष्ट बना रहता है। अतः उसके लिए आध्यात्मिक यानि परमार्थिक ज्ञान प्राप्त करना कठिन ही नहीं अत्यन्त दुष्कर हो जाता है। तात्पर्य यह है कि द्विभाव ही उसके जीवन का आधारभूत सिद्धान्त बन जाता है और आत्मज्ञान प्राप्ति में उसकी कोई रुचि या रुझान नहीं रहता। फलस्वरूप इच्छाओं की पूर्ति न होने के कारण वह आजीवन रोता-झुखता रहता है और कभी भी संतुष्ट नहीं होता। हम कह सकते हैं ऐसा मनुष्य अपना समस्त जीवन भ्रमित हो मूर्खों की तरह व्यतीत कर देता है अर्थात् यह उसकी बुद्धि के भ्रष्ट हो कुपथगामी होने का प्रतीक होता है। जिसके कारण वह अपना सम्पूर्ण आत्मविश्वास आत्मसंयम व आन्तरिक शान्ति खो बैठता है।

इसीलिए सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ के अनुसार मिथ्या शरीर का ध्यान लगाने वाला व्यक्ति सदैव जन्म-मरण के दुष्क्रम में फँसा रहता है और कदापि निर्वाण पद प्राप्त नहीं कर पाता। इस सत्य को दृष्टिगत रखते हुए आओ हम सब संकल्प लें कि हम कभी भी किसी शरीरधारी को अपना गुरु नहीं बनाएँगे अपितु सदैव अपनी चेतना यानि सुरत को शब्द यानि उसके शाश्वत गुरु के साथ जोड़े रखेंगे। याद रखो ऐसा करने से ही हम इस मृतलोक को जीत पाएँगे।

आओ सुरत को शब्द में मिलाकर शून्य हो जाएँ अर्थात् जीवात्मा भौतिक जगत से मुक्त हो परम मोक्ष को प्राप्त कर ले। यहीं सुरत का शाश्वत निवास स्थान यानि परमधाम है जिसे परमपद भी कहते हैं।

इसीलिए आओ सजन भाव को अपने आचरण व व्यवहार में अपनाकर समभाव-समदृष्टि के सिद्धान्तों का अनुशीलन करने हेतु स्वेच्छा से शरीर के स्थान पर शब्द को ही अपना गुरु मानने का निश्चय लें। याद रखो तभी हम सतयुगी नैतिकता व आचार संहिता को धारण करने में पूर्ण रूपेण सक्षम होंगे और पुनः सामंजस्य व शान्तिपूर्ण जीवन व्यतीत करते हुए अपने जीवन के परम लक्ष्य के सिद्ध करने में सफल हो पाएँगे।

समभाव दी होसवे फ़तह

सभी के लिए शुभकामनाएँ

हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वह सभी को बल, बुद्धि व ज्ञान बख्शें ताकि सभी मानवीय गुणों से ओतप्रोत हो सजन बनें और सतयुग-स्वर्णयुग की ओर बढ़ें।

आओ सजन बनें सतयुग की ओर बढ़ें...

इस संदर्भ में हम अपने परिसर में विश्व के प्रथम समभाव और समदृष्टि के स्कूल का निर्माण कर रहे हैं जहाँ से समभाव और समदृष्टि के ज्ञान को प्राप्त कर उसका अभ्यास करने की युक्ति प्रदान की जाएगी। सभी की जानकारी हेतु यह स्कूल शीघ्र ही खुलने जा रहा है। यदि कोई संस्था या व्यक्ति इस प्रयत्न में स्वेच्छा से अपना सहयोग देना चाहे तो उसका हार्दिक अभिनंदन है।

आपकी जानकारी हेतु सतयुग दर्शन ट्रस्ट (रजि.) राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली के नज़दीक फ़रीदाबाद में भूपानी-लालपुर रोड पर स्थित है। ट्रस्ट अपने उद्देश्यों को पूर्ण करने के लिए विभिन्न क्रियाकलापों के माध्यम से समय-समय पर सभी संभव प्रयत्नों द्वारा मानवता में बंधुत्व व प्रेम का संचार करता है।

प्रत्येक व्यक्ति की सूचना के लिए सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ की शिक्षाओं पर आधारित सत्संग का आयोजन प्रत्येक रविवार वसुन्धरा में होता है। इसकी रिकॉर्डिंग्स हमारी वेबसाइट पर भी उपलब्ध हैं। पाठक इन रिकॉर्डिंग्स को सुन कर उनसे भी लाभान्वित हो सकते हैं।

जय सीता राम जी

अधिक जानकारी के लिए, संपर्क करें

सतयुग दर्शन ट्रस्ट (रजि.)

‘वसुधारा’, ग्राम भोपानी, लालपुर रोड, फरीदाबाद – 121002 (हरियाणा)

दूरभाष: 0129 2202316/820/821 Ext. 504/510

मोबाइल: 09811016239, 09811066127

ईमेल: info@satyugdarshantrust.org वेबसाइट: www.satyugdarshantrust.org

© Satyug Darshan Trust (Regd.)